मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

पढ़ाई से प्रतियोगिता तक

हिन्दी व्याकरण

जूनियर स्तर

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ।

#9458278429

स्वर

स्वर उन ध्वनियों को कहते हैं। जिनके उच्चारण में हवा बिना किसी रूकावट के मुंह से बाहर निकलती है। इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है।या यह कहें कि इनके उच्चारण के दौरान किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती है।

स्वर के भेद

ह्रस्व स्वर

इन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है।जैसे--अ, इ, उ, ऋ।

दीर्घ स्वर

इन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है।जैसे आ,ई,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ।

स्वरों की मात्राएँ

अपने मूल रूप में

आज, औरत, इधर, ओर।

मात्रा

मात्रा के रूप में

ब्+ओ,ल्+ई

लिखते समय व्यंजन के साथ स्वर का जो रूप जोड़ा जाता है उसे मात्रा कैसे हैं।

स्वर ---- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

मात्रा ---- क, कि, की, कु, के, के, के, को, को।

दो अन्य ध्वनियां----अं, अः

ये न तो "स्वर" हैं और न "व्यंजन"इनका उच्चारण खबरों के बाद होता है औरयये व्यंजनों के साथ जुड़ती हैं।

अभ्यास कार्य

1-स्वर किसे कहते हैं?
2- स्वर के कितने भेद होते हैं?
3- अनुस्वार किसे कहते हैं?
4-मात्राएँ कितनी होती हैं?
5-विसर्ग किसे कहते हैं?

आयोगवाह

1--अनुस्वार

इनके उच्चारण में हवा नाक से निकलती है। जैसे ---कंगन, पांडव।

2--विसर्ग

इनका प्रयोग केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में मिलता है।जैसे ---संभवतः,प्रातः।

मुख्य बिन्दू

1- "अ" मात्रा नहीं होती"
2-"आ" की मात्रा व्यंजन के बाद लगती है। जैसे ---कान, दान, नाम।
3-"ए" की मात्रा व्यंजन से पहले लगाई जाती है।
4-"ई" की मात्रा व्यंजन के बाद लगाई जाती है।
5-"उ","ऊ","ऋ" की मात्रा व्यंजन के नीचे लगाई जाती हैं। जैसे ---कुल, चूरा, कृपा।
6-" ए","ऐ"की मात्रा शिरोरेखा के ऊपर लगाई जाती है।जैसे ----केवल, महेश्वरी।
7-"ओ","औ"की मात्राएँ व्यंजन के बाद लगाई जाती हैं।

व्यंजन- जिन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है वे वर्ण व्यंजन कहलाते हैं। व्यंजनों का उच्चारण करने में हवा को मुंह में अलग-अलग स्थानों पर रोकना पड़ता है।

व्यंजन के भेद

स्पर्श व्यंजन

कंठ | तालू | मूर्धा | दाँत | ओंठ

जिन वर्णों के उच्चारण के समय श्वास -वायु, उच्चारण-स्थान विशेष को स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।क् से म् तक सभी वर्ण स्पर्श व्यंजनहैं।

कवर्ग ---क्,ख् ,ग् ,घ् , ड़्:----कंठ
चवर्ग ----च् , छ् ,ज् ,झ् ,ञ् ---तालु
टवर्ग -----ट् ,ठ् ,ड् ,ढ् ,ण्-----मूर्धा
तवर्ग -----त् ,थ् , द्, ध् , न् ----दाँत
पवर्ग ----प् ,फ् , ब् ,भ् ,म् ---ओठ

अंत:स्थ व्यंजन

य् र् ल् व्

ये व्यंजन न तो पूरी तरह स्वर ही होते हैं और न ही पूरी तरह व्यंजन ही होते हैं।

ऊष्म व्यंजन

श् ष् स् ह्

जिन व्यंजनों को बोलते समय हवा मुँह में टकराकर गर्मी (ऊष्मा)पैदा करती है। उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।

गतिविधि

शिक्षक इस पाठ के माध्यम से छात्रों को दस प्रश्न बनाकर देंगे। ताकि बच्चे उनका उत्तर स्वयं खोजने की कोशिश करें।

अभ्यास कार्य

1- व्यंजन किसे कहते हैं?
2-वह व्यंजन बताओ जिसका उच्चारण दँत से लगने पर होता है?
3- व्यंजन के कितने भेद होते हैं?
4- उष्म व्यंजन किसे कहते हैं?
5- स्पर्श व्यंजन के भेद बताइए?

सीख ----

बच्चे हिन्दी व्याकरण में व्यंजन के भेद सरलता से सीख पायेंगे।

मुख्य बिन्दु

1-स्पर्श व्यंजन की संख्या 29 होती है।

2- उच्चारण में वायु पर्यटन की दृष्टि से व्यंजन के दो भेद होते हैं।

(क) अल्पप्राण व्यंजन---जिनके उच्चारण में कम समय लगता है तथा कम हवा की आवश्यकता होती है उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। इसमें प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा व पाँचवा वर्ण अल्पप्राण है। अंतस्थ व्यंजन तथा सभी स्वर भी अल्पप्राण हैं।

क्, ग्, ड़्. च्,ज्,ञ् ट्, ड्, ण् त्, दो,न्
प्, ब्, म् य्, र्, ल्, व्

(ख) महाप्राण व्यंजन-- इनका उच्चारण करते समय अधिक समय लगता है तथा अधिक हवा की आवश्यकता होती है इनके उच्चारण में हकार जैसी ध्वनि विशेष रूप से होती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा व्यंजन एवं सभी ऊष्म व्यंजन महाप्राण हैं।

ख्,घ् छ्,झ् ठ्,ढ् थ्,ध्,फ्,भ्, श्, ष्, स्, ह्

3-नाद की दृष्टि से वर्णों के भेद------

(क) घोष ---जब हवा स्वर तंत्रियों से टकराकर बाहर निकलती है तो घर्षण करती है। इस प्रकार से उच्चारित वर्ण घोष कहलाते हैं। इनका उच्चारण करते समय यदि गले पर हाथ रखा जाए, तो कंपन का आभास होता है।इसमें स्वर तथा व्यंजन तथा स्पर्श व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला,दूसरा और ऊष्म व्यंजन आते हैं।

स्वर ----अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
व्यंजन -----ग्, घ्, ड़्., ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, ण्, द्, ध्, न्, ब्, भ्, म्, ड़्, ढ़्, य्, र्, ल्, व्

(ख) अघोष---जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियों में कंपन नहीं होता,उन्हें अघोष वर्ण कहते हैं।स्पर्श व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा और ऊष्म व्यंजन इसमें आते हैं।

क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, श्, स्

पढ़ाई से प्रतियोगिता तक **जूनियर स्तर** मिशन शिक्षण संवाद — क्रमांक - 003

विषय –हिन्दी व्याकरण टॉपिक – वर्ण संयोग

वर्ण संयोग

जब एक से अधिक वर्ण आपस में मिलते हैं तो इसे वर्ण संयोग कहते हैं। स्वरों की सहायता के बिना व्यंजनों का उच्चारण नहीं किया जा सकता,उनमें "अ" की ध्वनि जुड़ी रहती है। या किसी स्वर की मात्रा जुड़ी होती है।

यदि किसी व्यंजन में स्वर मिला हुआ नहीं होता तो उसके नीचे हलंत चिन्ह(,) लगा होता है।जैसे ----च् +अ=च, म् +अ=म, ल् +अ=ल, प् +उ=पु

इस तरह किसी व्यंजन में स्वर मिला हुआ होता है तो इसे व्यंजन और स्वर का संयोग कहते हैं।परंतु जब व्यंजन के साथ व्यंजन का सहयोग होता है, तो इसे संयुक्त व्यंजन या द्वित्व व्यंजन कहते हैं।

व्यंजन से व्यंजन का संयोग

संयुक्त व्यंजन

जब दो या दो से अधिक स्वर रहित व्यंजन आपस में मिलते हैं तो उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

संयुक्त व्यंजन के रुप

इनका उच्चारण एक झटके में अन्य वर्णों की तरह होता है। इनके लिए वर्णमाला में विशेष चिन्ह स्वीकृतहैं।जैसे---- श्र=श्+र, त्र=त्+र, क्ष=क्+ष, ज्ञ=ज्+ञ

व्यंजनों के इस प्रकार के सहयोग के मध्य में भी कोई स्वर नहीं होता किंतु इनका उच्चारण एक झटके में होने पर भी उच्चारण में स्पष्टता होती है, जैसे----अच्छा, प्यास,ज्योति,न्यारा आदि।

द्वित्व व्यंजन

जब किसी व्यंजन का सहयोग उसी व्यंजन के साथ होता है तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं। जैसे---- सज्जन, उज्ज्वल, उड्डयन, मिट्टी

महाप्राण व्यंजनों का कभी द्वित्व नहीं होता, अतः उनके संयोग में पूर्व व्यंजन अल्पप्राण होता है। जैसे---- मक्खन, अच्छा, पत्थर, बग्घी आदि।

वर्ण विच्छेद

किसी शब्द में प्रयोग किए गए समस्त वर्णों के अलग-अलग करने को वर्ण विच्छेद कहते हैं।जैसे---- अमर=अ,म्+अ,र्+अ

स्त्री =स्+त्+र्+ई

संध्या =स् +अं, +ध् +य् +आ

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रशन बनाने को दें, साथ ही उनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा) ही खोजने का प्रयास करें।

मुख्य बिन्दु

1-कुछ व्यंजनों के अंत में खड़ी रेखा होती है जब इसका संयोग वर्ण से करते हैं तब यह खड़ी रेखा हटा दी जाती है। जैसे---प्+या+स=प्यास

2-"क" तथा "फ" है बीच में खड़ी रेखा (पाई) है। इन व्यंजनों को जोड़ते समय पाई के बाद लटकती टेढ़ी रेखा को छोटा कर देते हैं। जैसे---क्+या=क्यारी फ्+त= दफ़्तर

3-जिन व्यंजनों में पाई नहीं होती है जो गोल होते हैं उन्हें हलंत(,) लगाकर लिखा जाता है। जैसे---ट्+ट= मिट्टी

4- पाई वाले व्यंजन में "र"का संयोग --प्+र=प्र=प्रकाश

गोल व्यंजनों में "र"का संयोग --ट्+र=ट्र=ट्रक स्वर रहित अन्य वर्ण में "र"का संयोग--र् +म =र्म =धर्म

स् और त् के साथ "र"का संयोग---स् +र=स्र=सहस्र,स्+त्र=स्त्र=अस्त्र

5-कुछ संयुक्त व्यंजन दो व्यंजनों के मेल से बने होते हैं। जैसे---क् +ष=क्ष,त्+र=त्र,ज्+ञ=ज्ञ, श् +र =श्र

6-ष् तथा ह् के द्वित्व रूप नही बनते,महाप्राण व्यंजनों के द्वित्व रूप नही होते।

अभ्यास कार्य

1-वर्ण संयोग किसे कहते हैं?

2-संयुक्त व्यंजन कितने प्रकार के होते हैं?

3-द्वित्व व्यंजन किसे कहते हैं?

4- स् और त् के साथ "र" संयोग का एक उदाहरण लिखिये?

5-निम्नलिखित संयुक्त व्यंजन किन व्यंजनों के मेल से बने हैं? बताइये- ज्ञ, क्ष, त्र, श्र

इस ग्राफ के माध्यम से हम हिन्दी भाषा के शब्द-भेद को आसानी से जान सकेंगे।

शब्द -भेद

वर्णों के मेल से बना स्वतन्त्र तथा अर्थ पूर्ण वर्ण -समूह शब्द कहलाता है।

शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर होता है-अर्थ,रचना,उत्पत्ति तथा रूपान्तर।

शब्द
चार प्रकार

तत्सम-शब्द
भूमि,गृह,कृषि,कपाट आदि।

तद् भव-शब्द
हाथ,आग, खेती, धूल आदि।

देशज -शब्द
पगड़ी,पानी,लोटा आदि।

विदेशज -शब्द
हिन्दी में विदेशी भाषाओं के समाविष्ट शब्द।

फारसी-शब्द
अंजीर, ताज़ा दिवार आदि।

पश्तो-शब्द
टेबल,नर्स, मास्टर आदि।

अरबी-शब्द
कदम,इमारत, ग़रीब, दवा आदि।

तुर्की -शब्द
आगा, चिक, चोगा आदि।

पुर्तगाली-शब्द
कमरा,सागौन, गमला आदि।

डच---ड्रिल,तुरुप आदि।

रोमन ---फरवरी आग।

फ्रांसीसी----कूपन आदि।

जापानी --रिक्शा आदि।

चीनी ---चाय आदि।

अफ्रीकी-----वेंजो आदि।

लैटिन ---पेंशन आदि।

जर्मन-----नात्सी आदि।

उच्चारण में वायु -प्रक्षेप (प्रयास)की दृष्टि से व्यंजन के भेद

अल्पप्राण व्यंजन

जिनके उच्चारण में कम समय लगता है तथा कम हवा की आवश्यकता होती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला,तीसरा व पाँचवा वर्ण अल्पप्राण है। अंत:स्थ व्यंजन तथा सभी स्वर भी अल्पप्राण हैं। जैसे-----क्, ग्, ङ्---च्, ज्, ञ्---ट्, ड्,ण्
त्, द्, न्----प्, ब्, म्---य्, र्, ल्, व्

महाप्राण व्यंजन

इनका उच्चारण करते समय अधिक समय लगता है तथा अधिक हवा की आवश्यकता होती है इनके उच्चारण में "हकार" जैसी ध्वनि विशेष रूप से रहती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा,चौथा व्यंजन एवं सभी ऊष्म व्यंजन महाप्राण हैं। जैसे--ख, घ् छ, झ् ठ, ढ्
थ्, ध्, फ्, भ् श्, ष्, स्, ह्

नाद (स्वर -तंत्रियों में कंपन) की दृष्टि से वर्णों के भेद

घोष

जब हवा स्वर-तंत्रियों से टकराकर बाहर निकलती है तो घर्षण करती है। इस प्रकार से उच्चारित वर्ण घोष कहलाते हैं। इनका उच्चारण करते समय करते समय यदि गले पर हाथ रखा जाए, तो कंपन का आभास होता है। घोष वर्ण इस प्रकार हैं।

स्वर

अ, आ, इ, ई, उ,ऊ,
ऋ, ए, ऐ, ओ, औ,

व्यंजन

ग, घ, ङ,ज, झ, ञ, ड,
ढ, ण, द, ध, न, ब, भ,
म, ड़,ढ़, य, र, ल, व

अघोष

जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन नहीं होता, उन्हें अघोष वर्ण कहते हैं।स्पर्श व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा और ऊष्म व्यंजन इसमें आते हैं का पहला दूसरा और उसमें व्यंजन इसमें आते हैं।

क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, श्, ष्, स्

मुख्य बिन्दू

1-व्यंजन के भेद दो प्रकार के होते हैं।
(क) उच्चारण में वायु-प्रक्षेप की दृष्टि से
(ख) स्वर तंत्रियों में कंपनकी दृष्टि से
2-इनका आधार श्वास-वायु की मात्रा है।
3- रोमन लिपि में लिखते समय जिनमें H जोड़ा जाए, वे महाप्राण हैं:जैसे:
Kh= ख Gh= घ Ph = फ Bh = भ
Sh= श आदि।

अभ्यास कार्य

1-उच्चारण में वायु- प्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजन के कितने भेद हैं?
2- महाप्राण व्यंजन किसे कहते हैं?
3- घोष वर्ण किसे कहते हैं?
4- घोष वर्ण के प्रकार लिखिए?
5- अघोष वर्ण किसे कहते हैं?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रशन बनाने को दें,साथ ही उनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही) खोजने का प्रयास करें।

बच्चों अभी तक आपने वर्ण विचार और उनके उच्चारण के बारे में पढ़ा।आज हम शब्द के बारे में पढ़ेंगे कि शब्द किसे कहते हैं? और इसके कितने भेद होते हैं?

शब्द का अर्थ

शब्द एक ऐसे समूह को कहते हैं जो एक या एक से अधिक वर्णों के मेल से बनता है, साथ ही उस शब्द का एक अर्थ होता है।
हम इसको यूं भी कह सकते हैं-
कि एक से अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र तथा सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है।

हम इसको इस प्रकार समझ सकते हैं -

उदाहरण -1

क+ल=कल यानि-आने वाला दिन
क+म+ल=कमल यानि-कमल का फूल
क+ट-ह+ल=कटहल एक सब्जी का नाम

उदाहरण -2

ईटों का एक समूह है, जो मकान नहीं है किंतु जब कोई राज मजदूर ईटों को सही ढंग से या व्यवस्थित रूप से खड़ा करता है।तब वह मकान की शक्ल अख्तियार कर लेती हैं जिसे हम मकान कहते हैं।

बच्चों यहां आपने देखा कि जो वर्ण अलग अलग थे। जब हमने उन वर्णों का समूह बनाया तब हमें एक ऐसा शब्द प्राप्त हुआ या मिला जिसका कोई ना कोई अर्थ है। जो अब आपकी समझ में आ गया होगा इसको दूसरे उदाहरण से हम यूं समझ सकते हैं।

इसके लिए दो बातें मुख्य हैं।

- वर्णों का समूह हो।
- सार्थक हो या जिसका कोई अर्थ हो।

शब्द

एक वर्ण से निर्मित शब्द
"न"(नहीं) "व"(और)

इसमें इसमें केवल एक ही वर्ड का प्रयोग हुआ है किंतु वह एक वर्ण भी अर्थ रखता है।

अनेक वर्णों से निर्मित
कल,लड़का,अध्यापक

इसमें अनेक वर्णों के मेल से शब्दों को बनाया गया है और यह भी अर्थ रखते हैं।

अभ्यास कार्य

1-शब्द किसे कहते हैं बताइए?
2-ऐसे शब्द बताइये जो अनेक वर्णों से निर्मित हों?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें। साथ हीउनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही)खोजने का प्रयास करें।

मुख्य बिन्दू

1- शब्द एक वर्ण से निर्मित भी होते हैं।
2-शब्द अनेक वर्ण से निर्मित भी होते हैं।
3- वर्णों का समूह शब्द कह लाता है।
4- यह सार्थक एवं स्वतंत्र होते हैं।
5-ऐसे अर्थपूर्ण शब्द जिन्हें पढ़कर या लिखकर ही हमारे मन मस्तिष्क में उस वस्तु का खाका खिंच जाता है।

शब्द विचार

,,बच्चों आज हम शब्दों के वर्गीकरण के बारे में बात करेंगे।
भाषा के अनेक ऐसे स्रोत होते हैं।जिनके माध्यम से भाषा में शब्द भंडार या शब्दों का खजाना रहता है। इस शब्द भंडार में भाषा के कुछ शब्द अपने होते हैं और कुछ शब्द वह अन्य भाषा से ग्रहण करती है। इसके बाद भाषा अपने शब्दों के अनुसार और दूसरी भाषाओं के (लिए हुए)शब्दों के अनुसार अर्थ और वाक्य प्रयोग की बिना पर उनका विभाजन करती है। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर शब्दों के वर्गीकरण के पांच आधार हैं।

शब्दों का वर्गीकरण

- रचना के आधार पर
- स्रोत अथवा इतिहास के आधार पर
- अर्थ के आधार पर
- अभ्यास कार्य
- व्याकरणिक प्रक्रिया के आधार पर

स्रोत अथवा इतिहास के आधार पर

- तत्सम शब्द
- तद् भव शब्द
- देशज शब्द
- विदेशज शब्द
- द् विज या संकर शब्द

रचना के आधार पर

- रूढ़
- योगरूढ़
- यौगिक

अर्थ के आधार पर

- एकार्थी
- अनेकार्थी
- विपरितार्थक
- पर्यायवाची

प्रयोग के आधार पर

- सामान्य शब्द
- तकनीकी /पूर्ण परिभाषित शब्द
- अर्ध तकनीकी

व्याकरणिक प्रक्रिया के आधार पर

- संज्ञा
- सर्वनाम
- विशेषण
- क्रिया
- क्रिया विशेषण
- सम्बन्ध बोधक शब्द
- समुच्चयबोधक शब्द
- विस्मयादिबोधक शब्द

अभ्यास कार्य

1-शब्दों के भेद बताइए?
2-रचना के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं?
3-प्रयोग के आधार पर शब्दों के भेद बताइए?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें। साथ ही उनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही)खोजने का प्रयास करें।

मुख्य बिन्दू

बच्चों शब्दों के उपर्युक्त ☝ भेद के अलावा भी अन्य शब्दों में वर्णात्मक शब्द, अवधारणात्मक शब्द, अनुकरणात्मक शब्द, रणन शब्द, पुनरूक्त शब्द और विस्मयादिबोधक शब्द भी आते हैं।

पढ़ाई से प्रतियोगिता तक **मिशन शिक्षण संवाद** विषय - हिन्दी व्याकरण

जूनियर स्तर क्रमांक - 008 टॉपिक - स्रोत अथवा इतिहास के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

बच्चों आज हम शब्दों के वर्गीकरण को विस्तार पूर्वक पढ़ेंगे तथा शब्द के प्रत्येक वर्ग के बारे में जानेंगे।

स्रोत अथवा इतिहास के आधार पर

- तत्सम शब्द
- तद् भव शब्द
- देशज शब्द
- विदेशज शब्द
- संकर शब्द

बच्चों अब हम इन सभी शब्दों के बारे में जानकारी हासिल करेंगे

तत्सम-शब्द

ये शब्द तत् +सम से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "उसके समान" यानी ऐसे शब्द जो संस्कृत भाषा से ज्यों त्यों हिन्दी भाषा में आ गए हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे- रात्रि, जल,अश्रु आदि।

तत्सम-शब्द के प्रकार

- परम्परागत तत्सम-शब्द
- निर्मित तत्सम-शब्द

तद् भव-शब्द

ये शब्द तद् +भव से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "उससे पैदा हुआ" यानी संस्कृत भाषा से विकसित शब्द- हम इसको इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि संस्कृत भाषा के जो शब्द बदल कर या बिगड़ कर हिन्दी भाषा में प्रयोग होते हैं वह तद् भव-शब्द कहलाते हैं। जैसे- सूरज (सूर्य) हाथ (हस्त)आदि।

देशज-शब्द

वे शब्द जो न तद् भव शब्द हैं न ही तत्सम शब्द और न ही किसी बाहर की भाषा से आए हैं देशज शब्द कहलाते हैं।

हम इसको इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि देशज शब्द देश की पुरानी बोलियों से आए हैं या आवश्यकतानुसार बना लिए गए हैं। जैसे- पगड़ी, थैला, डिबिया आदि।

विदेशी शब्द

भारत में हजारों सालों से विदेशी लोग आते रहे हैं।अत: वे भारतीयों के सम्पर्क में आए और भारतीय उनके सम्पर्क में आए, इस मेलजोल या सम्पर्क में आने के कारण विदेशी भाषाओं के हजारों शब्द हिन्दी भाषा में आ गए, जबकि इन शब्दों का जन्म विदेश में हुआ। अत: ये शब्द विदेशी शब्द कहलाए।

हिन्दी में निम्नलिखित भाषाओं के शब्द आए-

अरबी	फारसी	तुर्की	अंग्रेजी	पुर्तगाली	फ्रांसीसी	चीनी	युनानी
वकील	बर्फ	कैंची	मास्टर	बालटी	बिगुल	तूफान	डेल्टा
कानून	खर्च	बहादुर	टेलीफोन	चाबी	इंजीनियर	चाय	टेलिग्राम

द्विज या संकर शब्द

जो शब्द अलग-अलग भाषाओं के मेल से बनकर प्रयोग में आ रहे हैं, उन्हें संकर शब्द कहा जाता है जैसे रेलगाड़ी, योजना,कमीशन आदि।

अभ्यास कार्य

1-देशज शब्द किसे कहते हैं?
2-तत्सम शब्द का अर्थ बताईये?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें,साथ ही उनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही)खोजने का प्रयास करें।

मुख्य बिन्दु

बच्चों इतिहास के आधार पर हम शब्दों को पाँच वर्गों में बाँट सकते हैं।हिन्दी के अलावा विदेशी भाषा के शब्द भी इसमें शामिल होते हैं। कुछ शब्द अलग-अलग भाषाओं के मेल से भी बने होते हैं।

बच्चों आज हम शब्दों के वर्गीकरण में "रचना के आधार पर"शब्द के कितने भेद होते हैं।के बारे में पढेंगे।
रचना के आधार पर हम शब्दों को तीन वर्गों में बाँट सकते हैं।

रचना या बनावट के आधार पर

- रुढ़
- योगिक
- योगरूढ़

रूढ़ शब्द

रूढ़ शब्द यानि मूल शब्द वह शब्द जो (परम्परा से)पहले से ही चले आ रहे हों और जिसका कोई अर्थ हो यानि ऐसे शब्द जिसका एक अर्थ होता है और जिसको सुनकर हमारे दिमाग में उस वस्तु की तस्वीर घूमने लगती है।ऐसे शब्दों को रुढ़ शब्द कहते हैं। इसके अलावा इन शब्दों को हम टुकड़ों में भी नहीं बाँट सकते यदि इन शब्दों को टुकड़ों में बाँटा जाए तो ये शब्द अर्थहीन हो जाते हैं। यानि उनका कोई अर्थ नहीं निकलता।
जैसे हाथी=हा+थी,घर =घ+र,चल=च+ल,घोड़ा=घो+ड़ा आदि
यदि हम इन शब्दों में से "हाथी" के टुकड़े करें
जैसे-"हा+थी" तो इनको अलग- अलग लिखने या बोलने पर कोई अर्थ नहीं निकलता।

योगिक शब्द

दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने शब्दों को (जिनका अर्थ हो) को योगिक शब्द कहते हैं।
जैसे-विद्यार्थी=विद् य+अर्थी,देवदूत=देव+दूत,
पानवाला=पान+वालाआदि।

योगरूढ़ शब्द

ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने होते हैं और किसी विशेष अर्थ की तरफ इशारा करते हैं।अर्थात एक निश्चित अर्थ के लिए प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे शब्द योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं।
जैसे जलज का अर्थ है"पानी में उत्पन्न होने वाला"अर्थात कमल का फूल ऐसे ही दूसरा शब्द है।चारपाई यानि जिस के चार पाए हैं।यहाँ "चारपाई" का शब्द खाट से है न कि कुर्सी या तख्त से।इस तरह इन शब्दों में योग भी हुआ है और इनका एक निश्चित अर्थ भी है।

अभ्यास कार्य

1-शब्द किसे कहते हैं?
2-यौगिक शब्द के दो उदाहरण दीजिए?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें। साथ ही उनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही) खोजने का प्रयास करें।

मुख्य बिन्दू

बच्चों रचना के आधार पर हिंदी शब्दों को दो वर्गों में बाँटा गया है। मूल शब्द या रुढ़ दूसरे योगरूढ़ शब्द लेकिन व्युत्पन्न शब्द में दो भेद होने से (एक यौगिक शब्द तथा दूसरे योगरूढ़ शब्द) रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के माने गए हैं।

बच्चों आज हम "अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण" के बारे में पढ़ेंगे।बच्चों हम अर्थ के आधार पर शब्दों को चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं।

अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

- एकार्थी शब्द
- अनेकार्थी शब्द
- विलोम शब्द
- पर्यायवाची शब्द

एकार्थी शब्द

जिन शब्दों के अर्थ में कभी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता और जिनका प्रयोग सदैव एक ही अर्थ में होता है। उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे-लोग, ईंट, मनुष्य आदि।

अनेकार्थी शब्द

एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। जैसे- हार का एक अर्थ है-पराजय और दूसरा अर्थ है- गले में पहनने वाली माला। दूसरा उदाहरण देखिये-पानी का एक अर्थ है- जल और दूसरा अर्थ है आब।

पर्यायवाची शब्द

एक ही अर्थ का ज्ञान कराने वाले भिन्न-भिन्न शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। जैसे-बादल के लिए-मेघ, जलद, नीरज, वारिद आदि।

विलोम शब्द

जो शब्द अर्थ की दृष्टि से एक दूसरे के विरोधी होते हैं।उन्हें परस्पर विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे- धनी= निर्धन, राजा= रंक, दु:ख=सुख आदि।

अभ्यास कार्य

1-अर्थ के आधार पर शब्दों को कितने वर्गों में बाँट सकते हैं?
2-अनेकार्थी शब्द किसे कहते हैं?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें। साथ ही उनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही) खोजने का प्रयास करें।

मुख्य बिन्दु

अर्थ के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं। 👉एक प्रकार के शब्द सदैव एक ही अर्थ का ज्ञान कराते हैं।
👉दूसरे प्रकार के शब्द अनेक प्रकार के अर्थ का ज्ञान कराते हैं।
👉तीसरे प्रकार के शब्द वह होते हैं जो भिन्न-भिन्न शब्द होकर एक ही अर्थ का ज्ञान कराते हैं।
👉चौथी प्रकार के शब्द एक दूसरे के विरोधी होते हैं।

बच्चों प्रयोग के आधार पर हम शब्दों को तीन वर्गों में बाँट सकते हैं।

प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

सामान्य शब्द | तकनीकी शब्द | अर्द्ध तकनीकी शब्द

सामान्य शब्द

ऐसे शब्द जिनका प्रयोग हम दैनिक जीवन के कामों में करते हैं। उन्हें सामान्य शब्द कहते हैं। जैसे- हाथ, पैर, खाना, रोटी, चावल आदि।

तकनीकी शब्द

ऐसे शब्द जिनका सम्बन्ध ज्ञान- विज्ञान या विभिन्न व्यवसाय से होता है। उन्हें तकनीकी शब्द कहते हैं। जैसे- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि शब्दों का सम्बन्ध हिन्दी व्याकरण से है।और पूंजी, अर्थव्यवस्था तथा वाणिज्य का सम्बन्ध अर्थशास्त्र से है। इसके अलावा भौतिकी, यांत्रिकी, रसायन और जैविक शब्दों का प्रयोग विज्ञान में होता है।

अर्द्ध तकनीकी शब्द

वे शब्द जिनका प्रयोग विज्ञान व्यवसाय के अलावा हमारे दैनिक जीवन में भी होता है। उन्हें अर्द्ध तकनीकी शब्द कहा जाता है। जैसे- गति, चाल, स्पीड का सम्बन्ध विज्ञान से भी है। और हम इन शब्दों का प्रयोग दैनिक जीवन में भी करते हैं।

अभ्यास कार्य

1-सामान्य शब्द किसे कहते हैं?
2-अर्द्ध तकनीकी शब्द कौन-कौन से हैं, लिखिये?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें। साथ ही उनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही) खोजने का प्रयास करें।

मुख्य बिन्दू

प्रयोग की दृष्टि से रूप रचना के आधार पर शब्दों को विकारी और अविकारी शब्दों के नाम से भी जाना है। इसमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्द आते हैं।

व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

बच्चों व्याकरणिक प्रक्रिया के आधार पर शब्दों को आठ वर्गों में बाँट सकते हैं।

संज्ञा

संज्ञा का अर्थ है सम्यक ज्ञान कराने वाला,जैसा कि आप सभी जानते हैं कि संज्ञा किसी व्यक्ति के नाम और किसी जगह के नाम को कहते हैं।जैसे -मोहन, देहली,नदी आदि।

सर्वनाम

सर्वनाम का अर्थ है सब का नाम अर्थात सब के नामों के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द या यूँ कह सकते हैं कि जो शब्द संज्ञा की जगह प्रयोग में लाए जाते हैं। उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे-मैं, तुम, हम आदि।

विशेषण

जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता यानि गुण और दोष बताते हैं।ऐसे शब्दों को विशेषण कहा जाता है।जैसे-सुंदर, घटिया, काला, आदि।

क्रिया

जिन शब्दों से किसी काम का होना या करना पाया जाए।उसे क्रिया कहते हैं। जैसे- चंदा, खेलना, हंसना आदि।

क्रिया विशेषण

जिन शब्दों से किसी कार्य का करना प्रकट होता है, उन शब्दों की विशेषता को प्रकट करने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं।जैसे-अभी, कल, इधर, अधिक आदि।

सम्बन्धबोधक

जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं।जैसे-आगे, पूर्व, समान, आदि।

समुच्चयबोधक

वे शब्द जो शब्दों या वाक्यांशों को परस्पर मिलाते हैं। समुच्चयबोधक शब्द कहलाते हैं।जैसे- किन्तु, परन्तु, आदि।

विस्मयादिबोधक

वे शब्द जिनसे खुशी, गम, प्रशंसा या घृणा आदि प्रकट होती है। विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं। जैसे-ओह, वाह, शाबाश आदि।

अभ्यास कार्य

1-संज्ञा की परिभाषा लिखिये?
2-सम्बन्धबोधक शब्द किसे कहते हैं?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें। साथ ही इनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही) खोजने का प्रयास करें।

मुख्य बिन्दु

व्याकरणिक आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं।
1-विकारीशब्द-- जो शब्द वाक्य प्रयोग में अपना रूप बदल लेते हैं। इसमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्द अविकारी शब्दों में आते हैं।
2-अविकारी शब्द -- जिन शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसमें क्रिया विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक शब्द आते हैं।

बच्चों आज हम पर्यायवाची शब्द के बारे में पढ़ेंगे।

हरभाषा में इस प्रकार के शब्द मिलते हैं। हिंदी भाषा में भी ऐसे शब्दों की कमी नहीं है, जो समान अर्थ देते हैं।इन शब्दों का अर्थ पूरी तरह से नहीं बल्कि लगभग समान ही होता है। इन शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म में (तिनका भर)अंतर होता है।किंतु वह उस शब्द से सम्बन्धित होते हैं।

पर्यायवाची शब्द

एक सा अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहा जाता है। इसको हम यों भी कह सकते हैं कि समान अर्थ को प्रकट करने वाले एक से अधिक शब्दों को पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं।

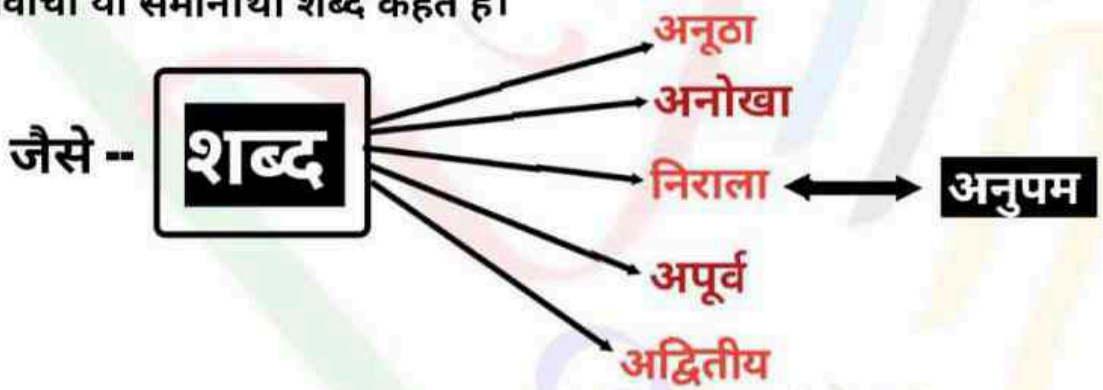

आपने देखा कि उपर्युक्त सभी शब्द एक शब्द "अनुपम" के व्यंजक हैं। हिंदी के कुछ प्रचलित और महत्वपूर्ण शब्दों को हम उदाहरणार्थ देख सकते हैं।

अग्नि--आग, अनल, पावक
अश्व --घोड़ा, तुरंग, बाजी
कमल-- जलज, नीरज, अंबुज
घर-- गृह, भवन, आवास
पहाड़-- पर्वत, गिरी, नग
फूल-- पुष्प, सुमन, कुसुम
सूर्य-- रवि, दिनकर, पतंग
ईश्वर-- प्रभु, परमात्मा, ईश

अभ्यास कार्य

1-पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं?
2-सूरज के तीन पर्यायवाची शब्द लिखिये?

मुख्य बिन्दु

पर्यायवाची शब्दों के अर्थों में सूक्ष्म अन्तर होता है।जैसे- मूर्ति पर चढ़ाने के लिए जल चाहिए, पानी नहीं- पीने के लिए पानी शब्द का प्रयोग करते हैं।नीर का नहीं-हाँ कुछ पर्यायवाची शब्द ऐसे अवश्य होते हैं, जो किसी भी स्थिति में किसी भी वाक्य में एक दूसरे का स्थान ले सकते हैं। जैसे-आदमी, मनुष्य- रात, रात्रि आदि। अतः पर्यायवाची शब्द का प्रयोग करते समय अत्यंत सावधानी बरतनी चाहिए।

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें। साथ ही उसके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही) खोजने का प्रयास करें।

अनेकार्थक शब्द

भाषा में प्रयोग के अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग अर्थ देने वाले शब्दों को अनेक आर्थिक शब्द कहते हैं।

आइए अब हम अनेकार्थक शब्दों के कुछ उदाहरण देखते हैं।

कनक= सोना, धतूरा, गेहूं
गति=चाल, दिशा, मोक्ष
घट =घड़ा, हृदय, शरीर
पत्र =पत्ता, चिट्ठी, पन्ना

विपरीतार्थक(विलोम) शब्द

जो शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर विरोधी होते हैं। उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।

आइए अब हम विलोम शब्दों के कुछ उदाहरण देखते हैं।

अनाथ=सनाथ	जन्म=मरण
आशा =निराशा	जल =थल
गुण =दोष	उचित =अनुचित
घर =बाहर	एक =अनेक

मुख्य बिन्दु

1-कुछ पर्यायवाची शब्द मूल रूप में विलोम शब्द होते हैं।जैसे-राजा=रंक
2-कुछ विलोम शब्द उपसर्ग लगाकर बनाये जाते हैं।जैसे-सत्य= असत्य
3-कुछ विलोम शब्द एक उपसर्ग छोड़कर दूसरा ग्रहण करने से बनते हैं।
जैसे-अनाथ=सनाथ, सजीव =निर्जीव, संयोग =वियोग।

अभ्यास कार्य

1-अनेकार्थक शब्द किसे कहते हैं?
2-विपरीतार्थक शब्द किसे कहते हैं लिखिये?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें। साथ ही उनके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही)खोजने का प्रयास करें।

समान ध्वनि वाले भिन्नार्थक शब्द

कुछ शब्द ऐसे होते हैं,जो आकार तथा ध्वनि की दृष्टि से मिलते जुलते होते हैं किंतु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं। जैसे- ओर,और= यहाँ पहले "ओर"का अर्थ "तरफ" से है। तो दूसरे "और"का अर्थ "तथा" से है।
अन्य शब्दों को उदाहरणार्थ देख सकते हैं।अवधि, अवधि, कलि, कली, कर्म, क्रम आदि शब्द इसी प्रकार के शब्द हैं।

हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध शब्द नीचे दिए जा रहे हैं।

अनल=	आग	अनिल=	वायु
अपेक्षा=	तुलना	उपेक्षा=	अनादर
उपकार=	बुराई	उपकार =	भलाई
अचल=	पहाड़	अचला=	पृथ्वी
आदि=	किसी भी कार्य का प्रारम्भ	आदि=	किसी भी चीज की आदत
कुल=	वंश	कूल =	किनारा (नदी या सरोवर का)

अनेक शब्दों के लिये एक शब्द

ऐसे शब्द जो भिन्न प्रकार के वाक्यांशों तथा तथा शब्द समूह का अर्थ प्रकट करते हैं। वे अनेक शब्दों के लिये एक शब्द कहलाते हैं। ऐसे शब्दों का प्रयोग किसी गद्यांश का एक तिहाई शब्दों में सार लिखते अथवा संक्षेपण करते समय किया जाता है । इससे अभिव्यक्ति के रुकावट आ जाती है।जैसे-"नरेश सोच समझकर खर्च करता है"- के स्थान पर "नरेश मितव्यमी है"। कहना अधिक अच्छा है। ऐसे ही कुछ शब्द नीचे दिये जा रहे है।

जिसकी चार भुजाएं हैं= चतुर्भुज
जिसके आने की तिथि मालूम न हो= अतिथि
जिसका कोई नाथ न हो=अनाथ
जिसे ईश्वर में विश्वास न हो=नास्तिक
जिसे ईश्वर में विश्वास है=आस्तिक
जिसका अन्त न हो= अनन्त
जिसे टाला न जा सके= अटल
जो व्याकरण जानता है= वैयाकरण

अभ्यास कार्य

1-भिन्नार्थक शब्द किसे कहते हैं?
2-एक शब्द बताने वाले शब्दों को लिखिये?

गतिविधि

शिक्षक इस शीट के माध्यम से प्रतियोगी छात्रों को कुछ प्रश्न बनाने को दें।साथ ही उसके उत्तर के बारे में समूह में (छात्रों द्वारा ही) खोजने का प्रयास करें।

संज्ञा की परिभाषा

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है सम+ ज्ञा अर्थात सम् यक ज्ञान कराने वाला,यानि कि उचित या समस्त ज्ञान कराने वाला, इसका दूसरा अर्थ हम इस प्रकार भी ले सकते हैं कि संज्ञा किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान और भाव के नाम को भी कहते हैं।

संज्ञा की विशेषताएँ

संज्ञा निम्नलिखित रुप में दिखाई देती है-

- **प्राणी वाचक संज्ञा** → जैसे -बच्चा, आदमी, राजा, मोहन आदि।
- **अप्राणी वाचक संज्ञा** → जैसे-मेज, किताब, गाड़ी, पर्वत आदि।
- **गणनीय** → जैसे- लड़का, केला, औरत आदि।
- **अगणनीय** → जैसे- हवा, दूध, भीड़, आदि।

संज्ञा कर्ता और कर्म के रूप में भी आ सकती है।उदाहरण के तौर पर--

रमेश पढ़ रहा है।(कर्ता के रूप में) सीता चित्र देखती है। (कर्म के रूप में)

संज्ञा के प्रकार

व्यक्तिवाचक

जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, विशेष वस्तु, स्थान या विशेष प्राणी का बोध कराते हैं। जैसे- राम, हिमालय, आदि।

जातिवाचक

जो शब्द किसी प्राणी या समुदाय की पूरी जाति का बोध कराते हैं। जैसे- लड़का, शहर, पर्वत आदि।

भाववाचक

किसी गुण, कार्य, भाव या स्वभाव का बोध होता है। जैसे- शीतलता, मिठास, खटास आदि। (हवा में शीतलता यानी ठंडक है, इमली खट्टी है।)

समूह वाचक

वे शब्द जो समूह का बोध करायें। जैसे- सेना, गिरोह, दल, आदि।

द्रव्यवाचक

वे शब्द जो किसी पदार्थ या द्रव्य पदार्थ का बोध करायें। जैसे- दूध, सोना, चाँदी, चावल आदि।

अभ्यास कार्य

1-संज्ञा किसे कहते हैं?
2-समूह वाचक संज्ञा की परिभाषा लिखिये?

बच्चों पिछली शीट में हमने पढ़ा की संज्ञा कितने प्रकार की होती है? आज हम भाववाचक संज्ञाओं में की रचना के बारे में पढ़ेंगे।

भाव वाचक संज्ञाओं की रचना

जिन शब्दों से पदार्थों के गुण -दोष, दशा, अवस्था, धर्म, क्रिया का व्यापार आदि का बोध होता है उन्हें भावात्मक संज्ञा कहते हैं। यदि हम गुण -दोष, अवस्था क्रिया का व्यापार आदि की बात करते हैं तो हम निम्नलिखित उदाहरणों से इनको इस प्रकार समझ सकते हैं। जैसे--

गुण -दोष -------प्रेम, मित्रता, शत्रुता आदि।
अवस्था ------बचपन, यौवन, बुढ़ापा आदि।
अमूर्त भाव ------मिठास, खटास, क्रोध आदि।
क्रिया का व्यापार ------सजावट, लेख, पढ़ाई आदि।

मिठास,बुढ़ापाआदि शब्द गुण, अवस्था और भाव को दर्शाते हैं।

⟷ इसका लक्षण इस प्रकार होगा।

रचना के उदाहरण के तौर पर इन शब्दों को देख सकते हैं जैसे-

लड़का =लड़कपन---- बच्चा =बचपन
हरा =हरियाली---- सुन्दर =सुन्दरता
वीर =वीरता — अच्छा =अच्छाई

लिखना =लिखाई ----उतरना =उतार
मिलना =मेल ----बुनना =बुनाई
कातना =कताई ----बहना =बहाव

व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

व्यक्तिवाचक संज्ञा जब किसी विशेष व्यक्ति का बोध न कराकर उस व्यक्ति के गुण अथवा दोषों का बोध कराती है, तो जातिवाचक संज्ञा बन जाती है। उदाहरण के तौर पर--

1-कबीरदास जी हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि थे।

बच्चों यहाँ कबीरदास शब्द जाति वाचक संज्ञा है।

2- आज के समाज में राजा हरिश्चंद्र तथा दधीचि जैसे दानी व्यक्ति ढूंढने से भी नहीं मिलेंगे।

इस वाक्यों में प्रयुक्त राजा हरीश चंद्र तथा दधीचि शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा न होकर जातिवाचक संज्ञा के रूप में हमारे सामने आते हैं।

बच्चों आपने देखा कि राजा हरिश्चन्दर व दधीचि जैसे दानी व्यक्ति विशेष व्यक्ति हैं और इस वाक्य में उनके गुणों पर प्रकाश डाला गया है कि वह महादानी थे और अपनी प्रजा को सुखी रखने के लिए सब कुछ दान करते थे।

जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

कभी-कभी जब कोई जातिवाचक संज्ञा जाति का बोध न करा कर किसी विशेष व्यक्ति का बोध कराती है तब यह व्यक्तिवाचक संज्ञा बन जाती है,उदाहरण के तौर पर--

इन वाक्यों को देखिए---

यह देश गाँधी और नेहरू का है।बापू जी हमारे राष्ट्रपिता हैं यहाँ गांधी जी व नेहरू जी जाति वाचक शब्द हैं किन्तु इन शब्दों का अभिप्राय यहाँ मोहनदास करमचंद गाँधी से और पंडित जवाहरलाल नेहरू से है।अतः ये शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण

हिन्दी में मूल भाववाचक संज्ञाओं की संख्या बहुत कम है, सच, दुःख, सुख, ठंड, गर्मी, जन्म, मरण आदि मूल रूप से भावात्मक संज्ञाएँ हैं।
अन्य शब्दों से मिलकर बनने वाली भाववाचक संज्ञाओं की संख्या अधिक है।
भाववाचक संज्ञा में प्रायः जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्दों में ता, तब, पन, हट, वट आदि प्रत्ययों के योग से बनती हैं।
हम इनको निम्नलिखित उदाहरणों से यों समझ सकते हैं।

विशेषण से भाववाचक संज्ञा

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
शीतल	शीतलता
आजाद	आजादी
चतुर	चतुराई
सरल	सरलता
नागरिक	नागरिकता
करूण	करूणा
सफल	सफलता

क्रिया से भाववाचक संज्ञा

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बसना	बसेरा
पढ़ना	पढ़ाई
करना	करनी
काटना	कटाई
सीना	सिलाई
बुनना	बुनाई

सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा

सर्वनाम	भाववाचक
मम	ममता
अपना	अपनापन
स्व	स्वत्व
पराया	परायापन
अहं	अहंकार

अव्ययों से भाववाचक संज्ञा

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
ऊपर	ऊपरी
नीचे	निचाई
आगे-पीछे	आगा-पीछा
शीघ्र	शीघ्रता
समीप	समीपता

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

जातिवाचक	भाववाचक
मानव	मानवता
चोर	चौरी
बच्चा	बचपन
मित्र	मित्रता
मजदूर	मजदूरी

अभ्यास कार्य

1-जाति वाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा दो उदाहरण लिखिए?
सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा के चार उदाहरण लिखिए?

क्रमांक 17 के उत्तर

उ०1-जिन शब्दों से पदार्थों के गुण-दोष, दशा, अवस्था, धर्म,क्रिया के व्यापार आदि का बोध होता है।उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

उ०2- कभी-कभी जब कोई जातिवाचक संज्ञा जाति का बोध न करा कर किसी विशेष व्यक्ति का बोध कराती है, तो वह व्यक्तिवाचक संज्ञा बन जाती है।

संज्ञा के लिए महत्वपूर्ण बातें

समुदायवाचक और द्रव्यवाचक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञा के ही उपभेद बताये जाते हैं। बच्चों इस से पहले की शीट में हमने आप को जानकारी दी थी कि संज्ञा किसे कहते हैं। और ये कितने प्रकार की होती है।इन सभी पर चर्चा की गयी थी।आज हम संज्ञा के भेद को कैसे पहचान सकते हैं?इसके बारे में जानकारी देंगे।

संज्ञा पहचानने की सरल विधि

दिये गये वाक्य में गांधी, आदम और सूरज शब्द व्यक्ति व वस्तु विशेष के नाम हैं।अतः ये व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

अन्य उदाहरण --

पुस्तक- समस्त पुस्तकों:, नदी- सभी नदियों:, मनुष्य- पूरी मानव- जाति:, देश-सभी देशों तथा लड़का- सभी लड़कों की सामान्य संज्ञा है, अतःये जातिवाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण हैं।

अन्य उदाहरण-

राम, मोहन, अर्जुन शब्द विशेष व्यक्तियों का बोध कराते हैं। गीता, बाइबिल शब्द विशेष वस्तुओं (पुस्तकों)का बोध कराते हैं और दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास आदि विशेष स्थानों के नाम हैं। यह सभी व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के अन्य उदाहरण हैं।

क्रमांक 18 के उत्तर

1-जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा के दो उदाहरण --1-मानव=मानवता,
2-मित्र=मित्रता
2-सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा के चार उदाहरण --1-मम=ममता,
2-स्व= स्वत्व, 3-पराया=परायापन,
4-अहं =अहंकार

व्यक्तिवाचक संज्ञा

वाक्य -

गाँधी जी बोले-" देखो भाई आदम! यह सूरज अपना काम कभी नहीं छोड़ता, तो हम अपना काम कैसे छोड़ें?"

जातिवाचक संज्ञा

वाक्य --

बच्चों को चाहिए कि वे शुभ अवसर पर एक पौधा अवश्य लगाएँ।

दिए गए वाक्य में बच्चों तथा पौधा शब्द किसी विशेष बच्चे या पौधे के लिए नहीं अपितु सभी बच्चों व पौधों (संपूर्ण जाति) का बोध करा रहे हैं।

अभ्यास कार्य

1-व्यक्तिवाचक संज्ञा के दो उदाहरण लिखिये?
2-जातिवाचक संज्ञा की पहचान लिखिये?

संज्ञा पहचानने की सरल विधि

बच्चों आज हम फिर संज्ञा को पहचानने की सरल विधि के बारे में जानकारी देंगे। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि पिछली शीट में हमने व्यक्तिवाचक संज्ञा और जातिवाचक संज्ञा के बारे में पढ़ा।बच्चों आज हम भाववाचक संज्ञा, समुदाय वाचक संज्ञा और द्रव्यवाचक संज्ञा के बारे में पढ़ेंगे इनके बारे में चित्रों के माध्यम से समझेंगे।

समूहवाचक संज्ञा

वाक्य

भेड़ों का झुण्ड मैदान में है।

☝ इस वाक्य में झुण्ड शब्द सभी भेड़ों के लिए आया है। इसलिए यह समुदाय वाचक संज्ञा है।

अन्य उदाहरण

कक्षा, सभा, परिवार, मंडली, भीड़ और सेना शब्द समूह का बोध कराते हैं। अतः यह समुदायवाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण हैं।

द्रव्यवाचक संज्ञा

वाक्य

दूध बोतल में है और तेल केन में है तथा चावल बोरे में रखे हैं।

☝ इस वाक्य में तेल और दूध बोतल में हैं क्योंकि वह द्रव्य पदार्थ हैं और चावल बोरे में रखे हैं। बच्चों चावल अधातु में आते हैं। अतः ये सभी द्रव्यवाचक संज्ञा का बोध करा रहे हैं।

अन्य उदाहरण

पीतल,ताँबा, सोना, चाँदी,(धातु पदार्थ) घी, दूध (द्रव्य पदार्थ)गेहूँ,चावल(अधातु)आदि द्रव्यवाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण हैं।

भाववाचक संज्ञा

वाक्य

राना गंभीरता से बोले, "इस लड़ाई में आपकी बहादुरी देखकर मैं बहुत खुश हूँ, हार जीत तो किस्मत के दो किनारे हैं।"

☝ इस वाक्य में गंभीरता,लड़ाई, बहादुरी और हार -जीत शब्द भाव, गुण व दशा का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये शब्द भाववाचक संज्ञा हैं।

अन्य उदाहरण

सुन्दरता,भिन्नता, यौवन, भूख, प्यास, बुढ़ापा आदि शब्द भाववाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण हैं।

क्रमांक 19 के उत्तर

उ०1- जातिवाचक संज्ञा की पहचान-- समान गुण , समान विशेषता रखने वाले शब्द अर्थात एक जाति का बोध कराने वाले शब्द जैसे शहर कहने से सभी शहरों (हरिद्वार जयपुर अलवर) आदि का बोध होता है।
उ०2- व्यक्तिवाचक संज्ञा के दो उदाहरण -गाँधी जी और सूरज।

अभ्यास कार्य

प्र०1-समूहवाचक संज्ञा के लिये कोई एक वाक्य बनाईये?
प्र०2-द्रव्यवाचक संज्ञा के चार उदाहरण लिखिए?

लिंग ज्ञान

बच्चों आज हम हिन्दी व्याकरण में "लिंग" के बारे में जानकारी हासिल करेंगे।
लिंग संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है। चिन्ह या निशान.. यानि किसी काम,किसी चीज या बात की पहचान का चिन्ह या लक्षण
व्याकरण में संज्ञा और सर्वनाम का वह वर्गीकरण जो शब्द विशेष द्वारा पुरूष यानि नर या स्त्री यानि मादा से सम्बन्ध होने का बोध कराते हैं। अर्थात संज्ञा के जिस रुप से उसके पुरुष जाति या स्त्री जाति के होने का पता चलता है उसे "लिंग"कहते हैं।

हम इसको यों भी समझ सकते हैं कि पुरुष जाति या स्त्री जाति का बोध कराने वाले (तत्व) चिन्ह या निशान को लिंग कहा जाता है।

हिन्दी भाषा में लिंग दो प्रकार के होते हैं।

इसके बारे में हम आगे विस्तार से चर्चा करेंगे।

- पुल्लिंग
- स्त्रीलिंग

"लिंग" से सम्बन्धित मुख्य बिन्दु

इस कारण हिन्दी भाषा में जो है प्राणी वाचक संज्ञाएँ हैं (यानि मानव निर्मित वस्तुएँ) उनके निर्णय में समस्या आती है। जैसे-- नाव,मेज आदि शब्द स्त्रीलिंग क्यों है? या जहाज, फूल, पेड़ आदि पुल्लिंग कैसे हैं?

बच्चों यह जो प्राणी वाचक या मानव निर्मित संज्ञाएँ हैं इनका प्रयोग व्यवहार तथा परम्परा के आधार पर और सुविधा के अनुसार पुल्लिंग व स्त्रीलिंग में करना पड़ता है।

हिन्दी भाषा में "लिंग" संस्कृत भाषा से आए हैं।संस्कृत भाषा में "लिंग" तीन प्रकार के होते हैं- स्त्रीलिंगऔर पुल्लिंग और नपुन्सक लिंग किन्तु हिन्दी भाषा में "लिंग" दो प्रकार के माने गये हैं।पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

हिन्दी भाषा में "लिंग" भेद हमेशा प्राकृतिक नहीं होते।जैसे- कौवा,तोता, मछली आदि ऐसे शब्द हैं,जिनसे नर व मादा का बोध होता है। किन्तु हिन्दी भाषा में कौवा तथा तोता पुल्लिंग हैं तथा मछली और मक्खी स्त्रीलिंग हैं।

अभ्यास कार्य

1- हिन्दी भाषा में "लिंग" शब्द कौन सी भाषा से आया है। बताइए?
2- संस्कृत में "लिंग" कितने प्रकार के होते हैं।

क्रमांक 20 के उत्तर

उ०1- समूहवाचक संज्ञा के लिए एक वाक्य- "आज विद्यालय में बच्चों की सभा थी।"
उ०2- द्रव्यवाचक संज्ञा के चार उदाहरण- तेल, जल, सिरका, चाँदी आदि।

लिंग भेद

बच्चों आज हम "लिंग भेद" के बारे में विस्तार पूर्वक पढ़ेंगे। जैसा कि हमने आपको पिछली शीट में बताया था कि लिंग का क्या अर्थ है और "लिंग" कितने प्रकार के होते हैं-

पुल्लिंग की परिभाषा

पुरूष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिंग कहते हैं। जैसे- लड़का, लुहार, अध्यापक आदि। यहाँ हम इसको निम्न वाक्यों से समझते हैं।

लड़का बाग में खेल रहा है।

कुम्हार बर्तन बना रहा है।

बन्दर केला खा रहा है।

इन सभी वाक्यों में कुम्हार, लड़का और बंदर शब्द एक ही जाति यानि पुरुष जाति या नर जाति का बोध करा रहे हैं। अतः यह शब्द पुल्लिंग हुए।

स्त्रीलिंग की परिभाषा

जो शब्द स्त्री जाति या मादा जाति का बोध कराते हैं। उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे-अध्यापिका, औरत, लड़की आदि। यहाँ हम इसको निम्न वाक्यों से समझते हैं।

लड़की झूला झूल रही है।

औरत खाना बना रही है।

अध्यापिका कक्षा में पढ़ा रही है।

इन सभी वाक्यों में स्त्री से सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग हुआ है। यानि औरत, अध्यापिका, लड़की। यह सभी शब्द स्त्रीलिंग हैं।

मुख्य बिन्दु

बच्चों "लिंग" में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनका प्रयोग हमेशा एक ही "लिंग" में होता है जैसे- घर, घड़ी, पुस्तक आदि।अतः हिन्दी भाषा में "लिंग" का निर्णय शब्द के अर्थ और शब्द के रूप के आधार पर किया जाता है। कुछ पुल्लिंग शब्द के पर्यायवाची स्त्रीलिंग होते हैं और कुछ स्त्रीलिंग के पर्यायवाची पुल्लिंग भी होते हैं।

हम देखते हैं कि प्राणीवाचक तथा अप्राणी वाचक शब्दों के लिंग रूप के अनुसार निश्चित किये जाते हैं तथा शेष के लिए व्यवहार को ही आधार मानना पड़ता है।

क्रमांक 21 के उत्तर

उ०1-संस्कृत भाषा से आया है।

उ०2- संस्कृत भाषा में लिंग तीन प्रकार के होते हैं। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुन्सक लिंग।

अभ्यास कार्य

प्र०1-पुल्लिंग किसे कहते हैं लिखिये?

प्र०2-स्त्री लिंग किसे कहते हैं?

पुल्लिंग की पहचान

बच्चों आज हम पुल्लिंग की पहचान कैसे करेंगे? इसके बारे में जानेंगे।आप सभी जानते हैं, कि मनुष्य जाति या पशु- पक्षियों में तो हम नर और मादा की पहचान आसानी से कर लेते हैं लेकिन हमारी जिंदगी में या हमारे व्यवहार में बहुत सी चीजें ऐसी आती हैं कि उन्हें देख कर हम सोच में पड़ जाते हैं कि यह वस्तु पुल्लिंग है या स्त्रीलिंग आज इसी विषय पर हम चर्चा परिचर्चा करेंगेइससे पहले हम संज्ञा शब्द को जान लेते हैं।

बच्चों संज्ञा- शब्द दो प्रकार के होते हैं।

1-प्राणीवाचक संज्ञाएँ--- यानि ऐसी संज्ञाएँ जिनका सम्बन्ध मानव जाति या पशु पक्षियों से होता है।

2-अप्राणीवाचक संज्ञाएँ ---यानि ऐसी संज्ञाएँ जो न नर है और न मादा, इन संज्ञाओं का सम्बन्ध न मानव जाति से है और न ही पशु पक्षियों से--- बच्चों ऐसी संज्ञाओं को पहचानने के लिए हम व्यवहार, शब्दकोश या जो हमारे माता-पिता और गुरुजन इन संज्ञाओं के लिए जो शब्द प्रयोग करते हैं, हम भी उन शब्दों को वैसा ही प्रयोग करते हैं।

लिंग-निर्णय सम्बन्धी कुछ नियम

1-अकारांत तत्सम संज्ञाएँ-- हमेशा पुल्लिंग होती हैं हिंदी व्याकरण में कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो पुल्लिंग ही कहे जाते हैं जैसे-- तन,मन,धन,मित्र,पुष्प,चित्र आदि।

2-जिन शब्दों का अन्त अ, आ, आव, आवा, औड़ा, प, पन, न, क, त्व, खाना, दान, वाला और एरा शब्द पर होता है,ऐसे सभी शब्द पुलिंग होते हैं।

अन्य वस्तुओं में पुल्लिंग की पहचान करना-

अ---- जंगल, घर, आम, दूध, गाँव आदि।
आ---- छोटा, मोटा, छोटा, पैसा, आदि।
आव ---- बढ़ाव, चढ़ाव, घटाव, भराव आदि।
आवा ---- बुलावा, चढ़ावा, दिखावा आदि।
औड़ा---- मकोड़ा, भगोड़ा, बिटोड़ा आदि।
पा ---- बुढ़ापा, खुरपा,सरापा, अलापा आदि।
पन ---- पागलपन, अपनापन, आदि।
न---नयन, नमन, हवन, गहन आदि।
क---- गायक, नायक, लेखक, आदि।
त्व ----सवत्व, मनुष्यत्व, मानत्व, घनत्व आदि।
खाना ---- दीवानखाना, चिड़ियाखाना आदि।
दान ------ खानदान, पायदान आदि।
वाला ----- काँच वाला, दुकान वाला, आदि।
एरा -----मौसेरा, फुफेरा, चचेरा आदि।

इसके अलावा पर्वतों के नाम, दिनों के नाम, ग्रहों के नाम, रत्न के नाम, पेड़ों के नाम, अनाज के नाम, धातु के नाम, द्रव्य पदार्थों के नाम, समुद्रों के नाम, द्वीपों के नाम, देशों के नाम, फलों के नाम और महीनों के नाम, कुछ शरीर के अंगों के नाम, वर्णमाला के अक्षरों के नाम आदि भी पुल्लिंग ही होते हैं।

धातु में चाँदी,द्रव पदार्थ में चाय, काफी, लस्सी व चटनी,महीनों में जनवरी, फरवरी,मई, जुलाई,शरीर केअंगों में ऊंगली, गर्दन, हथेली,व नाक, वर्ण माला में इ, ई, ऋ, आदि स्त्रीलिंग होते हैं।

क्रमांक 22 के उत्तर

उ०1- पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिंग कहते हैं।
उ०2- स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं।

अभ्यास कार्य

1-ऐसे दो शब्द लिखिये जिनके अन्त में "त्व" आता है?
2-ऐसे चार शब्द लिखिये जिनका अन्त "पन" पर होता है?

स्त्रीलिंग की पहचान

बच्चों पिछले सेट में हमने चर्चा की थी कि पुल्लिंग को कैसे पहचानते हैं। आज हम स्त्रीलिंग को पहचानने के बारे में चर्चा करेंगे। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि जिस तरह पुल्लिंग में बेजान वस्तुओं को पहचानना मुश्किल हो जाता है, उसी तरह स्त्रीलिंग को में भी बेजान वस्तुओं को पहचानना मुश्किल होता है।इसके लिए हमें व्यवहार और शब्दकोश आदि का सहारा लेना पड़ता है।

स्त्रीलिंग की पहचान करना

1-संस्कृत के आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं- जैसे- दया, कृपया, अहिंसा, माया, सभा आदि।
2-उकारांत तत्सम संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे- मृत्यु, आयु, वस्तु, वायु आदि।
3- भाषाओं के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू आदि।
4- ईकारांत संज्ञाएँ भी स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे- रोटी, नदी, नौकरी, चोटी आदि।
5- शरीर के अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- भौं, पलक, आँख, नाक आदि।
6-बोलियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- खड़ी बोली, हरियाणवी बोली, पंजाबी बोली आदि।

इसके अलावा जिन शब्दों में आवट, इया, ता, आई, आहट आदि आते हैं। वह स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे-
आवट--- बनावट, थकावट, सजावट आदि। इया--- चुहिया, डिबिया, बुढ़िया आदि।
ता--- शत्रुता, सरलता, विलासिता आदि। आई--- पढ़ाई, लिखाई, सिलाई आदि।
आहट--- घबराहट, मुस्कुराहट, गरमाहट आदि।
जिन शब्द के अन्त में नी, इमा लगा होता है वह शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं।जैसे-
नी ---भरनी, छलनी, करनीआदि।
इमा ---कालिमा, नीलिमा आदि।
नदियों व झीलों के नाम भी स्त्रीलिंग होते हैं।जैसे-
नदी--- गंगा, यमुना, सरस्वती आदि।
झील--- डलझील, बैकालझील आदि।

क्रमांक 23 के उत्तर

उ०1- मनुष्यत्व, घनत्व आदि।
उ०2- पागलपन, अपनापन, बड़प्पन आदि।

अभ्यास कार्य

प्र०1-चार नदियों के नाम बताओ?
प्र०2-चार ईकारान्त संज्ञाएँ लिखिये?

वचन

बच्चों जैसा कि आप सभी जानते हैं कि वचन यानि कि "कोल" या किसी के द्वारा कही गई बात, या किसी से किया गया "वायदा" हम व्यवहार की भाषा में वचन शब्द का प्रयोग किसी के द्वारा "वायदे" के लिए करते हैं।

जैसे--"राजू ने अपना वचन पूरा करने के लिए अपने प्राण तक दे दिये"लेकिन व्याकरण में "वचन"शब्द का प्रयोग इन दोनों से अलग होता है, व्याकरण में "वचन" का अर्थ "संख्या" का बोध कराने के लिए होता है। जैसे-

क

1- कुत्ता दौड़ रहा है।
2- लड़का गाना गा रहा है।
3- बंदर ने केला खाया।

ख

1-कुत्ते दौड़ रहे हैं।
2- लड़के गाना गा रहे हैं।
3- बन्दरों ने केले खाए।

इन वाक्यों में "कुत्ता"- "लड़का"- "बन्दर" शब्द एकवचन तथा "कुत्ते"- "लड़के"- "बन्दरों"जैसे शब्द एक से अधिक संख्या का बोध करा रहे हैं। इस तरह हम देखते हैं कि--

संज्ञा और दूसरे विकारी शब्द के जिस रूप से एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे "वचन" कहते हैं।

वचन के भेद

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं।

1-एक वचन

जिस शब्द से किसी एक वस्तु, व्यक्ति या पदार्थ का बोध होता है। उसे "एक वचन" कहा जाता है। जैसे-- माला, गाड़ी, मुर्गा, बच्चा आदि।

2-बहुवचन

जिस शब्द से अनेक वस्तुओं, व्यक्तियों या पदार्थ का बोध होता है। उसे बहुवचन कहा जाता है। जैसे-- मालाएँ, गाड़ियाँ, मुर्गे, बच्चे आदि।

वचन की पहचान

वचन की पहचान दो तरह से होती है।
1- संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के द्वारा-
2- क्रिया के द्वारा-

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के द्वारा

जब संज्ञा या सर्वनाम शब्द एक या अनेक का बोध कराते हैं। जैसे--

क

1-वह मेरा भाई है।
2- मैं पिछले सप्ताह दिल्ली गया था।
3- पेड़ पर चिड़िया बैठी है।

ख

1-वे मेरे भाई हैं।
2- हम पिछले सप्ताह दिल्ली गये थे।
3- पेड़ों पर चिड़ियाँ बैठी हैं।

इन वाक्यों में "क"वर्ग में आये संज्ञा या सर्वनाम शब्द एक का (वस्तु)तथा "ख"वर्ग में आये एक से अधिक (वस्तुएँ)होने का बोध करा रहे हैं।इस तरह "क" वर्ग में एक वचन और "ख" वर्ग में बहुवचन है।

क्रमांक 24 के उत्तर

उ०1-चार नदियों के नाम-गंगा, यमुना, सरस्वती और काली नदी।

उ०2-चार ईकारान्त संज्ञाएँ -रोटी, नदी, चोटी, टोंटी।

अभ्यास कार्य

प्र०1-वचन किसे कहते हैं?

प्र०2-वचन कितने प्रकार के होते हैं?

वचन की पहचान क्रिया शब्दों द्वारा

बच्चों आप जानते हैं कि इससे पहले की शीट में हमने आपको बताया था कि संज्ञा या सर्वनाम के द्वारा "वचन" की पहचान कैसे करते हैं।

चलिए अब हम जान लेते हैं, कि क्रिया शब्दों के द्वारा हम "वचन" की पहचान कैसे कर सकते हैं? पहले हम कुछ वाक्य देख लेते हैं।

क

1- बन्दर नाच रहा है।
2- शेर पानी पी रहा है।
3- बालक पढ़ेगा।

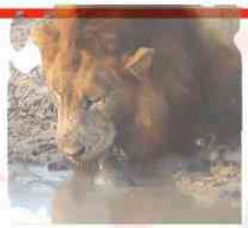

ख

1-बन्दर नाच रहे हैं।
2-शेर पानी पी रहे हैं।
3- बालक पढ़ेंगे।

उपर्युक्त वाक्यों में बन्दर, शेर, बालक आदि शब्दों से उनके "एकवचन" या "बहुवचन" होने का पता नहीं चलता, क्योंकि दोनों वाक्यों में इनका रूप एक सा है।

इन वाक्यों में वचन की पहचान क्रिया के रूप में होती है। नाच रहा है, पी रहा है और पढ़ेगा। क्रियाएँ "एकवचन" तथा नाच रहे हैं, पी रहे हैं, पढ़ेगे क्रियाएँ "बहुवचन" का बोध करा रही हैं। इस प्रकार वचन की पहचान क्रिया के रूप में भी की जा सकती है।

क्रमांक 25 के उत्तर

उत्तर 1- व्याकरण में वचन का अर्थ संख्या का बोध कराने के लिए होता है।
जैसे---कुत्ता दौड़ रहा है। एकवचन
कुत्ते दौड़ रहे हैं। बहुवचन

उत्तर 2- व्याकरण में वचन दो प्रकार के होते हैं।
1- एक वचन 2- बहुवचन

अभ्यास कार्य

प्र०1- "बन्दर नाच रहा है" वाक्य में कौन- सा वचन है बताइए?
प्र०2- वचन की पहचान हम किन शब्दों के द्वारा कर सकते हैं लिखिए?

मुख्य बिन्दु

1- भाववाचक संज्ञा एकवचन में प्रयुक्त होतीहैं।
2-धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं।
3- हमेशा एकवचन रहते हैं। जनता, वर्षा, पानी, दूध और पुलिस, सोना, चांदी, धन इत्यादि।
4- गुणवाचक संख्याओं का प्रयोग भी एकवचन में होता है।
5- सदा बहुवचन में प्रयोग प्राण, दर्शन और दान बाल आँसू।
6- एकवचन शब्द गण लोग, वृंद आदि समूह वाचक शब्दों के साथ जुड़कर बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

वचन का प्रयोग

बच्चों आज हम पढेंगे कि एक वचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग तथा बहुवचन के स्थान पर एक वचन का प्रयोग कैसे करते हैं? इसके अलावा एकवचन और बहुवचन में कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो हमेशा एक से ही प्रयोग किए जाते हैं। सबसे पहले हम देखते हैं कि एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग कैसे करते हैं?

एक वचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग

यदि हम किसी को सम्मान दे रहे हैं या उसे हम सम्मान की निगाह से देखते हैं तो ऐसी स्थिति में हम एक वचन की जगह बहुवचन का प्रयोग करते हैं।इसके लिए हम कुछ उदाहरण देखते हैं।

राजगुरू महान क्रान्तिकारी थे।

गुरु जी आप कल स्कूल नहीं आये।

मेरी माता जी बड़ी लेखिका हैं।

उपयुक्त वाक्यों में "थे","आए हैं" जैसे- शब्द बहुवचन हैं। इस प्रकार एक व्यक्ति के प्रति सम्मान व आदर का भाव प्रकट करने के लिए बहुवचन क्रियाओं का प्रयोग होता है। जैसे- यहाँ राजगुरु, माता जी और गुरु जी के लिए जो शब्द प्रयोग हुए हैं वह सभी बहुवचन शब्द हैं। कभी-कभी इंसान अपने को अधिक प्रभावशाली दिखाने के लिए भी "मैं"के स्थान पर "हम"का प्रयोग करते हैं। जैसे-

मालिक ने नौकर से कहा --हम घूमने जा रहे हैं।

आज कल एक वचन शब्द "तू"के स्थान पर भी लोग "तुम"बहुवचन शब्द का प्रयोग करने लगे हैं।

जैसे- दीपू "तू" कब आया?
दीपू "तुम" कब आये।

बहुवचन शब्दों के लिए एक वचन का प्रयोग

कई बार जातिवाचक शब्द भी बहुवचन का बोध कराते हैं।जैसे-

1-इलाहाबाद का अमरुद बहुत मशहूर हैं।
2- रीता के पास दो घर हैं।

इन वाक्यों में "अमरुद"और "घर" बहुवचन शब्द होने पर भी इनके लिए एक वचन शब्दों का ही प्रयोग हुआ है।

क्रमांक 26 के उत्तर

उ०1- "बन्दर नाच रहा है" वाक्य में एकवचन है।
उ०2- वचन की पहचान हम संज्ञा, सर्वनाम, और क्रिया शब्दों से कर सकते हैं।

अभ्यास कार्य

प्र०1- किसी को सम्मान देने में हम एकवचन शब्द का प्रयोग करेंगे या बहुवचन शब्द का बताइए?
प्र०2- "तू" की जगह कौन सा शब्द प्रचलित है। बताईये?

सदा वचन में प्रयोग शब्द

बच्चों आज हम उन शब्दों के बारे में जानेंगे कि वह कौन से शब्द है? जिनका प्रयोग हमेशा एकवचन या बहुवचन में ही होता है।

सदा एकवचन में प्रयोग किए जाने वाले शब्द

जैसे- पानी, आकाश, जनता, वर्षा, सत्य, झूठ, बालू आदि। यह सभी ऐसे शब्द हैं जो एकवचन में ही प्रयोग होते हैं।
चलिए अब हम कुछ वाक्य देख लेते हैं।

1-आज पानी खूब बरसा।
2-आज बहुत बारिश हुई या वर्षा हुई।
3- सारा स्कूल स्वच्छ है।
4- पण्डाल में बहुत जनता थी।
5-वह शुद्ध वनस्पति घी है।
6- बच्चे बालू में घर बना रहे हैं।
7-हमेशा सत्य ही जीतता है और झूठ हमेशा हारता है।

सदा बहुवचन में प्रयोग किए जाने वाले शब्द

जैसे- प्राण,दर्शन, हस्ताक्षर, आँसू, पोस्ट आदि ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग हमेशा ही बहुवचन में होता है। अब हम कुछ वाक्य देख लेते हैं। जैसे-

1-मैंने पेपर पर हस्ताक्षर कर दिये।
2-आप के तो दर्शन ही मुश्किल से हुए।
3- रवि की बात सुनकर उसकी आँखों में आंसू आ गये।
4-युद्ध की सुनकर उसके होश उड़ गये।
5-उसके प्राण निकल गये।

क्रमांक 27 के उत्तर

उ०1-बहुवचन का
उ०2-"तुम" शब्द प्रचलन में आ गया है।

अभ्यास कार्य

प्र०1-पानी, आकाश शब्द एकवचन हैं या बहुवचन बताईये?
प्र०2-हस्ताक्षर शब्द एकवचन है या बहुवचन?

एक वचन से बहुवचन बनाने के नियम

बच्चों आज एकवचन से बहुवचन बनाने के तरीके के बारे में समझेंगे। यहाँ कुछ शब्द दिए जा रहे हैं।जिन्हें पढ़कर आपको मालूम होगा कि यदि हम एकवचन शब्दों के अन्त में कुछ शब्द जोड़ देते हैं।तो वे एकवचन शब्द बहुवचन में परिवर्तित हो जाते हैं।

1-अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में "एँ" जोड़ दिया जाता है। जैसे-

बात = बातें
सड़क = सड़कें
कलम = कलमें
दीवार = दीवारें

2-आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के अन्त में "आ" को "ए" कर दिया जाता है।

कपड़ा = कपड़े
चना = चनें
गधा = गधे
पंखा = पंखे

3- आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में "एँ" लगा दिया जाता है। जैसे-

माला = मालाएँ
कथा = कथाएँ
लता = लताएँ
कन्या = कन्याएँ

4- इकारान्त और ईकारान्त शब्दों के अन्त में "याँ" जोड़ दिया जाता है। और ईकारान्त शब्दों की "ई" को ह्रस्व "इ"कर दिया जाता है। जैसे-

नदी = नदियाँ
सखा = सखियाँ
संधि = संधियाँ
लिपि = लिपियाँ

5-"इया" अन्त वाले स्त्रीलिंग शब्दों में अन्तिम "या"को "याँ" कर दिया जाता है।

चिड़िया = चिड़ियाँ
गुड़िया = गुड़ियाँ
बुढ़िया = बुढ़ियाँ
कुतिया = कुतियाँ

6-उकारान्त और ऊकारान्त तथा औकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में अन्तिम "उ","ऊ"और "औ" में "एँ" जोड़ दिया जाता है।जैसे-

गौ = गौएँ
वस्तु = वस्तुएँ
वधु = वधुएँ
धेनु = धेनुएँ

7-कुछ शब्दों के साथ "वृंद, वर्ग,जन,लोग,गण, आदि शब्द जोड़कर बहुवचन शब्दों का निर्माण होता है।

अध्यापक = अध्यापक वृंद
छात्र = छात्रगण
मजदूर = मजदूर वर्ग
प्रजा = प्रजाजन

शीट 28 के उत्तर

उ०1-पानी और आकाश एक वचन शब्द हैं।
उ०2-हस्ताक्षर शब्द एक वचन है।

अभ्यास कार्य

प्र०1-छात्र शब्द का बहुवचन रूप लिखिये?
प्र०2-चिड़ियाँ बहुवचन शब्द का एकवचन शब्द बताईये?

पढ़ाई से प्रतियोगिता तक
जूनियर स्तर
मिशन शिक्षण संवाद
विषय- हिन्दी व्याकरण
क्रमांक- 29 प्रकरण- कारक

कारक की परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम की वह स्थिति जो वाक्य में क्रिया के साथ उसके सम्बन्ध को स्पष्ट करती है।इसे हम इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि शब्दों का क्रिया के साथ सम्बन्ध स्थापित करने वाले शब्दों को कारक कहते हैं।जैसे-

1-राजू ने रोटी खाई।

2-मनीषा ने भाई को बुलाया।

3- पिताजी रवि के लिए पुस्तक लाये।

4- मेरा भाई छत पर बैठा है।

इन सभी वाक्यों को विभिन्न शब्दों जैसे- को, ने, के लिए और पर जैसे शब्दों ने जोड़ा है। यानी इन चिन्हों के द्वारा ही वाक्य में क्रिया अथवा अन्य शब्दों से सम्बन्ध प्रकट होता है। इन चिन्हों के कारण ही इनके रूपअलग-अलग नजर आ रहे हैं। इन चिन्हों को ही परसर्ग कहा जाता है।

परसर्ग के कारण ही वाक्य का प्रत्येक शब्द एक दूसरे सेबँधा हुआ है। यदि यह सब न हो तो क्रिया के सम्बन्ध या आपस में शब्दों का कोई सम्बन्ध न हो तथा वाक्य को पढ़ने पर वह अधूरा मालूम होगा। यदि हम इन कारक शब्द को हटाकर वाक्यों को पढ़ेंगे तो वाक्य अजीब सा लगता है।

इस प्रकार क्रिया, संज्ञा या सर्वनाम के बीच जो शब्द सम्बन्ध स्थापित करते हैं या उन्हें आपस में जोड़ते हैं तो उन्हें ही कारक कहा जाता है।

कारक के आठ भेद होते हैं। हर कारक का कोई न कोई चिन्ह अवश्य ही होता है।

- कर्ता कारक
- कर्म कारक
- करण कारक
- सम्प्रदान कारक
- अपादान कारक
- सम्बन्ध कारक
- सम्बोधन कारक
- अधिकरण कारक

क्रमांक 29 के उत्तर

उ०2- छात्र शब्द का बहुवचन है छात्रगण।
उ०2- चिड़ियाँ बहुवचन शब्द का एकवचन रूप चिड़िया है।

अभ्यास कार्य

प्र०1-कारक किसे कहते हैं?
प्र ०2-कारक के कितने भेद होते हैं बताइए?

कर्ता कारक

बच्चों आज हम कारक के भेद के बारे में विस्तार से पढ़ेगे /जानेंगे।
जैसा कि आप सभी जानते हैं कि कारक के आठ भेद होते हैं। यहाँ हम कर्ता कारक के बारे में जानेंगे।

कर्ता कारक की परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम के उस रुप को कर्ता कारक कहते हैं,जिससे क्रिया के करने बोध होता है।जैसे-
बच्चों आप ये चित्र देख रहे हो इस चित्र में एक बैल वाला बैल को चाबुक से मार रहा है। बैल वाले ने बैल को तब तक मारा जब तक बैल गिर न गया।
चाबुक मारने की क्रिया एक आदमी यानि बैल वाला कर रहा है। बैल वाला कर्ता हुआ यानि वही कार्य को अन्जाम दे रहा है।
कारक की विभक्ति "ने" होती है।
हिन्दी भाषा में कर्ता कारक का प्रयोग "ने "विभक्ति के साथ तथा विभक्ति के बगैर भी किया जा सकता है। जैसे- कुछ वाक्य देखते हैं।
1-बैल वाले ने बैल को चाबुक से मारा।
2-बैल वाला बैल को मार रहा है।

कर्ता कारक में विशेष

हम देखते हैं कि कर्ता कारक की मूल विभक्ति "ने "होती है। लेकिन कभी- कभी यह अन्य विभक्तियों के साथ की प्रयोग होता है जैसे-हम कुछ वाक्य देखते हैं।
1- रवि को दिल्ली जाना था।
इस वाक्य में रवि कर्ता कारक है। तथा कर्ता कारक के साथ "को" विभक्म्ति का प्रयोग किया गया है।
2- बीमार बच्चे से बैठा भी नहीं जा रहा।
इस वाक्य में बीमार बच्चा कर्ता कारक है और इसके साथ "से" विभक्न्ति का प्रयोग किया गया है
3- कक्षा में बच्चों द्वारा पोस्टर बनाए गए।
इस वाक्य में बच्चे कर्ता कारक हैं तथा इसके साथ "द्वारा" विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

ध्यान रखने योग्य बातें

हमेशा ने विभक्ति का प्रयोग सकर्मक क्रियाओं के साथ भूतकाल में किया जाता है जैसे-कुछ वाक्य देखिये-
1-राजू ने खाना खाया।
इस वाक्य में प्रयुक्त खाना क्रिया सकर्मक है तथा भूतमाल में है। इसी लिये "ने" विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
2-शंकर दौड़ा
वाक्य में दौड़ा क्रिया है। इसीलिए भूतकाल में होते हुए भी अर्कमक है। यही कारण कि यहाँ विभक्ति "ने "का प्रयोग नहीं किया गया है।

क्रमांक 30 के उत्तर

उ०1- संज्ञा या सर्वनाम की वह स्थिति जो वाक्य में क्रिया के साथ उसके सम्बन्ध को स्पष्ट करती है।
उ०2-कारक के आठ भेद होते हैं।

अभ्यास कार्य

प्र०1-कर्ता कारक की परिभाषा लिखिये?
प्र०2- कर्ता कारक की विभक्ति बताईये?

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

⭐ पढ़ाई से प्रतियोगिता तक विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों पर आधारित विस्तृत जानकारी।

⭐ सरल सहज आकर्षक एवं रोचक सामग्री।

⭐ नवीन पद्धति तथा स्पष्ट भाषा में प्रस्तुतीकरण।

⭐ बेहतर समझ विकसित करने एवं पारदर्शिता तथा विश्वास को बढ़ावा देने का एकमात्र अभियान।

⭐ नवोदय विद्यालय प्रतियोगिता, राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित परीक्षा प्रतियोगिता, सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा एवं विद्याज्ञान जैसी समस्त प्रतियोगिताओं का एक अनूठा अभियान।

⭐ मिशन शिक्षण संवाद परिवार की प्रेरक पहल जो छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सीखने सिखाने,सहयोग,सम्मान एवं प्रोत्साहन के लिए मार्गदर्शक के रुप में छात्रों की सहायता करता है।

जूनियर स्तर

संकलन एवं सहयोग
टीम पढ़ाई से प्रतियोगिता तक अभियान

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ। #9458278429